दृष्टि The Vision

हिन्दी साहित्य
(Hindi Literature)

टेस्ट-6

(द्वितीय प्रश्न-पत्र)

DTVF / OPT-23 HL-2306

निर्धारित समय: तीन घंटे *Time Allowed: Three Hours*	अधिकतम अंक : 250 *Maximum Marks* : 250

नाम (Name): Praduman kumar

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? | हाँ | ✓ | नहीं | |

मोबाइल नं. (Mobile No.): ______

ई-मेल पता (E-mail address): ______

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 27/07/2023

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2023] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2023]:

0	8	1	1	4	9	2

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS.***

*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*

*Questions no. 1 and 5 are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** question from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answer must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): ______ टिप्पणी (Remarks): ______

मूल्यांकनकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर) *Evaluator (Code & Signatures)*	पुनरीक्षणकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर) *Reviewer (Code & Signatures)*

दृष्टि The Vision

Feedback

1. Context Proficiency (संदर्भ दक्षता)
2. Introduction Proficiency (परिचय दक्षता)
3. Content Proficiency (विषय-वस्तु दक्षता)
4. Language/Flow (भाषा/प्रवाह)
5. Conclusion Proficiency (निष्कर्ष दक्षता)
6. Presentation Proficiency (प्रस्तुति दक्षता)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

खण्ड - क

1. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिये: 10 × 5 = 50

(क) दिनकर की कविता 'उर्वशी' का प्रतिपाद्य

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

रामधारी सिंह दिनकर राष्ट्रीय चेतना एवं ओज के कवि है इनकी सांस्कृतिक हालि, एवं इनकी रचना "संस्कृति के चार अध्याय" के आधार पर राष्ट्रकवि रुप में विख्यात है।

दिनकर की रचना उर्वशी पौराणिक आख्यान पर आधारित ~~व~~ रचना है जिसमें ऐतिहासिक वातावरण में स्त्री पुरुष संबंधों की खोज की है।

उर्वशी में पुरुरवा एवं उर्वशी नायक नायिका है दोनो रूमानी प्रेम से भरे युवक युवती है। इनका प्रेम छायावादी अध्यात्मिक प्रेम है।

आगे दिनकर जी ~~उर्वशी~~ उर्वशी में संबंधों में गंभीरता, द्वन्द जैसे विषय को

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

को उठाते हैं जहाँ दिनकर जी पर अकहानी, अकविता जैसी विशेषताओं का प्रभाव नजर आता है।

प्रेम में उत्पन्न विलास, घृणा, दुख को दिनकर जी ने पूरी मार्मिकता के साथ उठाया है। जिसके कारण उर्वशी वर्तमान समाज के लिए भी प्रासंगिक हो उठा है।

दिनकर जी ने उर्वशी में परिपक्व प्रेम दर्शन एवं मार्मिकता का परिचय दिया है। उर्वशी का कथा विधान भी सीधा एवं सरल है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) इप्टा का परिचय और महत्त्व

इप्टा का गठन द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान 1943 में हुआ जो तत्कालीन परिस्थितियों का परिणाम था, 5-6 साल में ही इप्टा ने देशव्यापी उपलब्धि पा ली।

* इप्टा का पूरा नाम इंडियन पीपुल्स थियेटर एसोसिएशन था।
* इप्टा ने विभिन्न राजनीतिक सामाजिक चेतना से प्रेरित होकर नाटकों का मंचन किया।
* राष्ट्रवादी एवं प्रगतिवादी नाटकों को आधार बनाकर समतामूलक समाज का सोच दिया।
* पृथ्वी थियेटर के साथ मिलकर इप्टा ने दक्षिण भारत में नाटकों का प्रसार किया।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

* ठाता में भाषा वैविध्य भी था जिसमें उर्दू, फारसी एवं हिन्दी नाटक मंचित होते है।

* जातिवाद एवं साम्प्रदायिक मान्यताओं पर तंज कसने वाले नाटकों के मंचन के लिए विख्यात रहा है।

ठाता ने नाटकों को एक मजबूत आधार प्रदान किया है तथा वर्तमान सिनेमा के लिए पृष्ठभूमि भी तैयार की थी।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) संस्मरण 'स्मृति की रेखाएँ'

संस्मरण आधुनिक काल में विकसित हुई विधा है जिसमें स्मृति को आधार बनाया जाता है। मुख्य संस्मरणकर्ता महादेवी वर्मा एवं कांतिकुमार जैन जी है।

"स्मृति की रेखाएं" संस्मरण प्रायः महादेवी वर्मा जी का है जिसमें में इन्होंने गद्य भाषा का प्रयोग किया है। तथा विभिन्न सामाजिक तत्वों का सन्निवेश किया है।

'स्मृति की रेखाए' में महादेवी जी ने रंगों का भी सफल प्रयोग किया है इन्हें ज्ञात है कि रंगों का कब और कितना प्रयोग करना होता है।

* इसमें महादेवी जी ने मुख्यतः वेदना एवं विरह को आधार बनाकर रचा है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

* महादेवी जी मुख्यतः वेदना की कवयित्री हैं इसका ही प्रभाव इनके रेखाचित्रों पर भी पड़ता है।

महादेवी वर्मा संस्मरण विधा में भी सफल रही हैं तथा उन्होंने इस विधा के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया। आगे कांतिकुमार जैन ने भी इसको बढ़ावा दिया है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) संस्मरणकार कांतिकुमार जैन

संस्मरण स्मृति पर आधारित विधा होती है। कांतिकुमार जैन संस्मरण के क्षेत्र में मुख्य ~~सफल~~ संस्मरणकर्ता रहे हैं इनके संस्मरण सामाजिक यथार्थ पर आधारित होते हैं।

कांतिकुमार जी ने अपने संस्मरण में सामाजिक यथार्थ जैसे जातिवाद गरीबी जैसे विषयों को भी जोड़ा है। जिस कारण इनके संस्मरण की प्रासंगिकता बढ़ी है।

कांतिकुमार ने संस्मरण में गद्य भाषा का संतुलित प्रयोग किया है तथा रंगों के स्तर पर पर्याप्त प्रयोगधर्मिता का परिचय दिया है। जिस कारण इनके संस्मरण जीवंत हो उठे हैं तथा दृश्य विधा रूप में [illegible] होते हैं

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कांतिकुमार की ख्याति प्रायः संस्मरण कर्ता के रूप में ही रही है ये उस क्षेत्र के सशक्त हस्ताक्षर रहे हैं।

संस्मरण के क्षेत्र में कांतिकुमार ने मापदण्ड रचे हैं जिनको वर्तमान में माना जाता है तथा इनके सफल प्रयोग से इस विधा को बढ़ावा मिला।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) अज्ञेय की कहानियों का शिल्प

अज्ञेय की पहली कहानी विपथगा 1931 में रची गई है इनकी कहानियाँ विचारात्मक एवं विश्लेषण प्रधान होती हैं इनपर फ्रायड के मनोविश्लेषणवाद का भी प्रभाव पड़ा है

भाषा - अज्ञेय ने खड़ीबोली का सफल प्रयोग किया है तथा इनकी भाषा सरल, सहज एवं बोधगम्य बन पड़ी है।

प्रतीकात्मक - मनोविश्लेषणवाद का प्रभाव होने के कारण अज्ञेय ने प्रतीकात्मक शैली का प्रयोग किया है जैसे ये वैयक्तिकता साथ समाज को महत्व देते हुए कहते हैं

"हम नदी के द्वीप हैं वह हमें आकार देती है"

बिंब - बिंब भी इनकी रचनाओं की प्रभावशीलता को बढ़ाते हैं जिससे रचना जीवन्त हो उठती है एवं पाठ्य विधा से दृश्य विधा रूप में प्रस्तुत होती है जैसे इनकी कहानी है - कितनी नाव में कितनी बार,

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

हरी घास पर छंद भर आई।

छंद - छंद में इन्होंने सरल, छंदों सभा प्रयोग किया है।

कथानक - इनकी कहानियों का कथानक बिखरा हुआ है जो कहीं-२ नयी कहानी की विशेषताओं को धारण करता है। क्योंकि ये अंतर्मन पर ज्यादा लिखते थे।

अज्ञेय एक प्रसिद्ध एवं विशिष्ट कहानीकार है इनकी विशेषता इनकी कहानियों में संवेदना के स्तर पर ही नहीं शिल्प के स्तर पर दिखती है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

2. (क) क्या भक्तिकाव्य को लोकजागरण का काव्य कहना उचित है? सुचिंतित विचार प्रस्तुत कीजिये। 20

भक्तिकाल को हिन्दी साहित्य का स्वर्णकाल कहा जाता है जो इसकी संवेदना एवं शिल्प के लिये कहा जाता है जिसमें लोकजागरण के तत्वों का भी पर्याप्त सन्निवेश हुआ है। इसमें मुख्य कवि मलिक मोहम्मद जायसी, तुलसी, सूरदास, एवं कबीरदास है।

लोक जागरण के काव्य में जनता को प्रगतिशील विचारों से परिचित कराया जाता है तथा जनता को नये रूप, नये मूल्यों रूप में जगाया जाता है। लोक संस्कृति के तत्वों का सन्निवेश होता है।

प्रकृति - प्रकृति लोक संस्कृति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है इसी प्रकार सूर एवं तुलसी के काव्य में भी प्रकृति मुख्य भूमिका निभाती है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

"मधुबन तुम कत रहत हरे
विरह वियोग श्याम सुन्दर के ठाढ़े क्यों न जरे"

गायों का चित्रण में लोकसंस्कृति का आभास कराता है -

"ऊधौ इतनी कहियो जाय
बहुत कृसगात भई हैं तुम बिन बहुत तुम्हारी गाय"

जातिवाद - जाति प्राय लोक संस्कृति का ही हिस्सा होता है जो भक्तिकाव्य में दिखा है हालांकि यहाँ प्रगतिशील नजरिया है।

"जाति-पाँति हम ते बड़ नाही, नाहि बसत तुम्हारे छैयाँ
अति अधिकार जनावत याते जाते अधिक तुम्हारी गैयाँ"

सगुण-निर्गुण रूप - भक्तिकाल में सगुण एवं निर्गुण भक्ति का प्रभाव था जो भक्तिकाव्य में परिलक्षित होता है किन्तु समन्वयवादी दृष्टिकोण के साथ"

"अगुनहि-सगुनहि नहि कछु भेदा"

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

त्योहारों - भारतीय लोक संस्कृति त्योहारों से भरी रहती है वही लोक संस्कृति एवं त्योहार भक्तिकाव्य में भी परिलक्षित होते हैं।

धार्मिक मान्यता - लोक संस्कृति की धार्मिक भावनाओं को बढ़ावा दिया तथा हिन्दू मिथकों का प्रयोग किया गया जैसे राम, कृष्ण आदि।

"सोभित कर नवनीत लिये
घुटरुन चलत रेनु तन मंडित मुख दधि लेप किये"

तत्कालीन समाज - भक्तिकाव्य तत्कालीन समाज की आर्थिक एवं राजनीतिक स्थितियों को दिखाया गया है तथा लोककल्याणकारी राज्य की स्थापना का लक्ष्य रखा है।

"खेती न किसान को भिखारी को न भीख भली"

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

स्त्री प्रति पारम्परिक नजरिया - स्त्री के प्रति वही पारम्परिक नजरिया अपनाया गया है।

"ढोल गंवार शूद्र पशु नारी
सकल ताड़ना के अधिकारी"

भक्तिकाल ने लोकजागरण को प्रस्तुति दी है तथा एक आदर्श समाज की लोक मानदण्ड भी रचे हैं भक्तिकाल में लोकजागरण के तत्व समाहित हैं किन्तु भक्तिकाल पूर्णतः भक्ति का काल है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) पृथ्वीराजरासो के महाकाव्यत्व पर विचार कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

पृथ्वीराज रासो ~~चन्दबार~~ चन्द्रबरदाई द्वारा रचित हिन्दी का पहला महाकाव्य है जो पृथ्वीराज चौहान एवं मोहम्मद गोरी के युद्ध को दिखाता है यह एक घटना प्रधान, चरित्र प्रधान महाकाव्य है।

पृथ्वीराजरासो की महाकाव्यात्मकता :-

नायक धीरोदात्त हो - पृथ्वीराज रासो का नायक तत्कालीन समाज के अनुसार धीरोदात्त है उच्च कुल है। तथा वीरता एवं शौर्य जैसे गुण से परिपूर्ण है।

अंगीरस - वीर, शांत तथा श्रृंगार को अंगीरस माना जाता है पृथ्वीराज रासो का अंगीरस वीर रस है क्योंकि

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

अन्त में वीरता का भाव आता है

8 से ज्यादा सर्ग - इस कसौटी पर भी यह खरा उतरता है पृथ्वी० में 8 से ज्यादा सर्ग में विभक्त है।

छन्द वैविध्य - छन्द वैविध्य की दृष्टि से पृथ्वीराजरासो का कोई शानी नहीं है इस अकेली रचना में चन्द्रबरदाई ने 68 छन्दों का प्रयोग किया है जिसकारण नामवर सिंह ने रचना को छंदों का राजा कहा है

भाषा शैली - शैली के धरातल पर पर उदात्त शैली है जो अपभ्रंश के करीब है दोहा, छन्द, रोला का प्रयोग किया है विम्बात्मकता, प्रतीकात्मका तथा संगीतात्मकता के गुण धारण करता है।

पृथ्वीराज रासो परम्परागत कसौटियों के आधार पर

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

निर्विवाद रूप से महाकाव्यात्मकता का गुण धारण करते है लेकिन आधुनिक कसौटियों पर कम जा उतरता है। किंतु तत्कालीन परिवेश के अनुसार नायक नायकत्व एवं धीरोदात्त के गुण धारण करता है इसलिए ही पृथ्वीराज रासो निर्विवाद रूप से हिन्दी का पहला महाकाव्य कहलाता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) हिन्दी साहित्येतिहास-लेखन परंपरा में 'शिवसिंह सरोज' की सीमाओं एवं महत्त्व पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

हिन्दी साहित्येतिहास लेखन परम्परा को दो भागों में बांटा जाता है अनौपचारिक लेखन जिसमें - नाभादास, कुलपति, आदि थे तथा दूसरी औपचारिक जिसमें गिर्यसन, मिश्रबंधु एवं शुक्ल जी है।

शिवसिंह ~~सरोज~~ सेंगर साहित्येतिहास लेखन की औपचारिक प्रथा के इतिहासकार है तथा ये भारतेन्दु युग के है इन्होंने प्राय: पत्रिकाओं को माध्यम से साहित्येतिहास में योगदान दिया इनकी कृति 'शिवसिंह सरोज' मुख्य है।

(*) शिवसिंह सरोज में काल विभाजन के आधार पर ~~प्रश्चा~~ प्रश्नचिन्ह लगता है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

(*) नामकरण के स्तर पर इनके साहित्येतिहास में परिपक्वता की कमी दिखती है।

* इनके साहित्येतिहास में वैज्ञानिकता का अभाव है। जिसके कारण इनके इतिहास को शुक्ल जी के समतुल्य मान्यता नहीं दी जाती है।

(*) शिवसिंह सरोज में मौलिकता की कमी है। इनकी सभी हस्तियां प्राय: किसी न किसी विचारधारा से प्रभावित लगते है।

(*) हालांकि शिवसिंह सरोज में प्रामाणिकता का पूर्ण ध्यान रखा गया है किन्तु इनका विश्लेषण सूक्ष्म स्तर का है

(*) शुक्ल जी, द्विवेदी के तुल्य इनकी साहित्येतिहास लेखन में परम्परागत एवं समग्रतावादी दृष्टिकोण का अभाव है

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

हालांकि उपर्युक्त सीमाओं के बावजूद शिवसिंह सेंगर का साहित्येतिहास की सराहनीय योगदान रहा है तथा उन्होंने साहित्येतिहास की परम्परा को बढ़ावा दिया है आने वाले रचनाकारों के लिए मानक ~~बने~~ बने हैं साथ ही उनके ~~साहित्येतिहास~~ साहित्येतिहास लेखन की विशेषता है कि उन्होंने समकालीन रचनाकारों को विशेष महत्व दिया है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

3. (क) हिंदी के 'समस्या नाटक' पर प्रकाश डालिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

4. (क) समकालीन हिंदी उपन्यास में 'स्त्री-विमर्श' की उपस्थिति की पहचान कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

समकालीन हिन्दी उपन्यास 1980 के बाद विकसित हुई धारा है जिसमें समकालीन समस्याओं को कथा का आधार बनाया गया है तथा इसी पत्यार की मुख्य विशेषता है कि इसमें स्त्री चेतना को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है

स्त्रीयों ने स्वयं भोगी हुए यथार्थ को प्रस्तुत किया है तथा कहा है_" संवेदना कितनी भी तीव्र एवं व्यापक क्यों न हो ~~स्व~~ स्वयंवेदना के बराबर नहीं हो सकती है"

स्त्री चेतना में महत्वपूर्ण योगदान, कृष्णा सोबती, मन्नू भण्डारी, ~~पुष्पा मधुमत~~, मैत्रेयी पुष्पा आदि हुए है

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

महानगरीय बोध - महानगरों में स्त्रियों की स्थिति का अंकन किया है। तथा महानगरीय भाव बोध लघुमानव, पितृसत्तात्मक, अकेलापन जैसी समस्या इनके केन्द्रीय संवेदना का हिस्सा है।

कार्यालयी यौन शोषण - नारी घर से बाहर निकल रोजगार करने लगी जिसके परिणाम स्वरूप कार्यालय पर यौन शोषण को दिखाया गया है जिसमें मृदुला जैसी कहानीकारों ने लेखनी चलाई है।

भावनात्मक दबाव - स्त्रियों पर बढ़ते मानसिक, सामाजिक एवं कार्यालयी दबाव को दिखाया गया है महिलाओं को कार्यालयी काम के साथ घरेलू काम भी करना पड़ता था जिससे उनके स्वास्थ्य पर गलत

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

असर पड़ता है इसका चित्रण भी इसमें किया गया है

ग्रामीण पारिवेशगत शोषण - ग्रामीण स्तर पर हो रहे शोषण को मैत्रेयी पुष्पा जैसी कहानीकारों ने मुख्य भूमिका निभाई है तथा निम्न तबके की वंचित महिलाओं के समक्ष उत्पन्न समस्याओं को उठाया है

दलित महिला चेतना - दलित महिला रचनाकारों के साहित्य में दोहरा दंश झेलने को मिलता है जैसे एक तो उच्च जातियों द्वारा होने वाला शोषण तथा दूसरा अपनी ही समाज में पितृसत्तात्मक मानसिकता के कारण व्याप्त शोषण। इस प्रकार नयी कहानी संवेदना के स्तर पर चरम मार्मिक स्थिति का आभास

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कराती है।

समकालीन हिंदी कहानियों में सबसे अलग महिलाओं के साथ बढ़ते अपराध, बलात्कार, महिलाओं का बाजारीकरण जैसी समस्या को भी उठाया है इस दिशा में समकालीन कालीन अपनी सभी पूर्ववर्ती कहानियों का प्रत्यान विद्ध है

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) भीष्म साहनी के उपन्यासों में निहित सामाजिक चेतना पर प्रकाश डालिये। 15

प्रेमचंद ने जिस सामाजिक यथार्थ के उपन्यास की धारा की शुरुआत की थी इसी धारा को विकसित करने में भीष्म साहनी का मुख्य योगदान है इन्होंने भी सामाजिक यथार्थ को अपने उपन्यासों का केन्द्रीय विषय बनाया है

भीष्म साहनी के उपन्यासों में पर्याप्त विषय वैविध्य मिलता है।

(*) साहनी जी ने अपने उपन्यास सरोज में स्त्री को स्वतंत्रता दिलाने एवं आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया, जो मुख्यतः स्त्री चेतना में आधारित उपन्यास है जिसमें सामाजिक यथार्थ को पूरी नग्नता से दिखाया गया है

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

* अल्प उपन्यास तमस में इन्होंने धर्म पर विवेक एवं बुद्धि को अधिक महत्वपूर्ण माना है यह उपन्यास सामाजिक यथार्थ के साथ साम्प्रदायिक झलक भी दिखाता है तथा देश में बढ़ते साम्प्रदायिकता वाद को इसने दिखाया है इस स्तर पर तमस, गीतांजली श्री के बेलपत्र की संवेदना ग्रहण करता है

* भीष्म साहनी अपने उपन्यासों में राजनीतिक, एवं आर्थिक समस्या को उठाते है तथा गरीबी एवं बेरोजगारी को भी उपन्यास का मुख्य विषय बनाते है

* निम्न जाति लोगों द्वारा सामने की जाने समस्या को साहनी ने अपने उपन्यासो में दिखाया है

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

भीष्म साहनी सामाजिक चेतना के सशक्त उपन्यासकार है इनके उपन्यास सामाजिक विद्रूपताओं से लड़ते है तथा समाज में समतामूलक माहौल का निर्माण करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है वर्तमान समय में इनके उपन्यास ज्यादा प्रासंगिक हो उठते है

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) अकहानी आन्दोलन का परिचय देते हुए उसकी प्रमुख प्रवृत्तियों पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

अकहानी आन्दोलन नई कहानी आन्दोलन के विरोध में खड़ा हुआ आन्दोलन था जिसका समय काल 1963 के आसपास का है तथा अकहानी आन्दोलन पर फ्रांस में चल रहे "एंटी स्टोरी मूवमेंट" का भी प्रभाव पड़ा है

अकहानी आन्दोलन, नई कहानी की यांत्रिकता के विरोध में खड़ा हुआ, इसे आधारों से मोहभंग जैसे कारण विद्यमान थे। अकहानी आन्दोलन की मुख्यः तीन प्रवृत्तियाँ है

महानगरीय कहानी - इसमें आधुनिक भावबोध से प्रेरित कहानी रही है जो मुख्यतः महानगरों में रची गई गई महानगरीय मध्यवर्गी

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

इसकी केंद्रीय विशेषता है। शहरीकरण के कारण व्याप्त लघुमानववाद, विसंगतिबोध, अकेलापन जैसी परिस्थितियों ने इसके निर्माण में मुख्य योगदान दिया था।

प्रेम संबंधों पर आधारित - इस वर्ग में प्रायः प्रेम संबंधों पर बल दिया गया तथा संबंधों में बढ़ते टकराव, द्वन्द्व, विचारों में विरोध आदि इनमें दिखता है जैसे दूसरा एवं एक और जिंदगी में देखा जा सकता है।

स्त्री चेतना पर कहानी - तीसरी प्रवृत्ति में स्त्री चेतना पर आधारित कहानी रची गई है जो स्त्रियों को स्वतंत्रता की पक्षधर थी इसमें मुख्य कहानीकार कृष्णा सोबती,

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मन्नू भण्डारी, एवं शिवानी जैसी महिला रचनाकारों ने लेखनी चलाई थी।

अकहानी आन्दोलन में मुख्यतः नई कहानी के विरोधी तत्वों को समावेश किया गया था की जो इसमे नयी कहानी के तत्व मिलते है। हिन्दी हिन्दी के विकास में अकहानी आन्दोलन में मुख्य भूमिका निभाई है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

खण्ड - ख

5. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिये: 10 × 5 = 50

(क) नई कहानी की सीमाएँ

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

1955 के समय में शुरू हुआ आन्दोलन है जिसकी शुरुआत भैरवप्रसाद मिश्र के "नई कहानी" नामक प्रस्तावना के बाद मानी जाती है।

नई कहानी प्रायः आजादी से मोहभंग, अकेलापन, लघुमानव, शहरीकरण के कारण उपजी समस्याओं से जन्मा है। जिसमें निम्न सीमाएं थी।

* नई कहानी आन्दोलन भोगा हुआ यथार्थ पर बल देने के कारण शुरू हुआ था किन्तु अंत तक आते-2 सोचे हुए यथार्थ पर बल देने लगा था।
* नई कहानियों में यौन उन्मुक्तता के दृश्यों, घटनाओं एवं वर्णनों को जबरदस्ती

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

प्रस्तुत किया जाता है जिससे कहानी में अश्लीलत्व दोष उत्पन्न हो जाता है

(*) अन्त तक आते-2 यांत्रिकता से भर गई थी।

(*) नई कहानी जिन समस्याओं को उठाती थी उनके समाधान का कोई संदेश नहीं दिया है।

(*) केन्द्र में मध्यवर्ग को रखा गया था, किसान, मजदूर, वंचित वर्गों की उपेक्षा हुई।

नई कहानी आन्दोलन में निम्न समस्याएं रही उसके बावजूद इसने कहानी में निरंतरता को बनाये रखा तथा कहानी को नये आयाम प्रदान किये।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) दिनकर की कविता में ओज

रामधारी सिंह दिनकर राष्ट्रीय चेतना एवं ओज कवि माने जाते हैं तथा उनकी यह ओजस्विता उनकी कविताओं को भी शक्तिगत होती है।

(*) दिनकर जो तटस्थता पर भी तंज कसते हुए कहते हैं तटस्थ होना शोषण का प्रछन्न रूप है।

"समर शेष है नहीं पाप का भागी केवल व्याध्र
जो तटस्थ हैं समय लिखेगा उनका भी इतिहास"

(*) दिनकर अपनी कविताओं में पाठक को समस्या से लड़ने के लिए प्रेरित करते हैं

"पुण्य है विच्छेदन कर देना उसे बढ़ रहा तेरी
तरफ जो हाथ है"

(*) पौराणिक आख्यान के सहारा लेते हुए दिनकर युद्ध को भी कार्य मानते हैं पर वह

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

न्याय के लिये किया गया हो।

"नरक उनके लिये नहीं जो पाप को स्वीकारते हैं
न उनके लिए जो रण में रहे ललकारते हैं।"

* इसी प्रकार दिनकर जी आगे अपनी संस्कृति एवं समुदाय के लिए मनुष्य को सब कुछ न्योछावर करने का संदेश देते हैं।

"लेकिन जब बात हो समुदाय की
जो छोड़ना पड़ता तब त्याग की"

उपर्युक्त उदाहरणों से समझा जा सकता है कि दिनकर ओजस्वी विचारों के लिए जाने जाते हैं इसलिए ही उन्हें ओज का कवि एवं उनकी कविताओं को ओजस्वी कविता कहा जाता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'परख' उपन्यास की 'कट्टो'

परख उपन्यास हिन्दी साहित्यकार के विशिष्ट रचनाकार जैनेन्द्र कुमार का है जैनेन्द्र के उपन्यासों की सहज विशेषता होती है कि उनकी नारी चरित्र महत्वपूर्ण होते हैं जैसे - परख की कट्टो, "सुनिता" एवं "मृणाल"।

जैनेन्द्र ने परख उपन्यास में महिलाओं की विधवा (वैधव्य) समस्या को दिखाया है

* कट्टो एक बाल विधवा है जो चारित्रिक दृष्टि से ईमानदार, प्रेमनिष्ठ उदात्त से भरी है
* स्नेह, त्याग जैसे भावों से उनके चरित्र का निर्माण हुआ है। जिस कारण कट्टो चरित्र एकदम जीवन्त हो उठा है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

जैनेन्द्र मनोविश्लेषण के नजरिये से भी
कट्टो के मन की परतों में सांकेत है तथा
आपकी उनकी मन की परतों का विश्लेषण
करते है।

* कट्टो के माध्यम स्त्रीपौंकेमन के द्वंद्व
को दिखाया गया है किन्तु कट्टो में
यह द्वंद्व सरल एवं सहज है मृणाल
एवं सुनीता की तरह चंचलता धारण
नहीं करता है।

कट्टो जैनेन्द्र के नारी चरित्रों
में महत्वपूर्ण चरित्र है जिसके माध्यम से
जैनेन्द्र कुमार ने नारी मन की तारों को
झाँकने की कोशिश की है

दृष्टि The Vision | 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright - Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) विद्यापति की सौंदर्य-चेतना

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विद्यापति मूलत: मैथिल कवि है इनकी रचनाओं
का काल: लगभग 14-15 वी शताब्दी है इन्होंने
14 रचनाएं की है। जिनमें से 11 संस्कृत में
तथा 3 हिन्दी में नामत: कीर्तिलता, कीर्तिपताका,
पदावली आदि।

विद्यापति ने राधा एवं कृष्ण
के सौंदर्य पर लेखनी चलाई है किन्तु
विद्यापति के कृष्ण गीता के कृष्ण से ज्यादा
जयदेव के गीतगोविन्द एवं हाल की गाथा
सप्तशती के कृष्ण है।

तथा कृष्ण का सौंदर्य
इतना निराला है कि ऐसा सिर्फ स्वप्न में ही
हो सकता है।

" ए सखि देखल एक अपरूप
सुनइत मानबि सपन सरूप"

कृष्ण का सौंदर्य
सिर्फ शारीरिक सौंदर्य ही नहीं, वाणी कार्य सौंदर्य है

दृष्टि The Vision | 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright - Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

"माधव बोलत मधुरी बानी"

* विद्यापति ने अपने काव्य को काव्य में श्रृंगारिता को अधिक महत्व दिया है इसी कारण शुक्ल जी ने इन्हे श्रृंगारिक कवि माना है।

* ये भक्त कवि रूप में भी विख्यात है क्योंकि इनके भजन सुनकर चैतन्य महाप्रभु भी बेहोश हो जाते है।

* अन्तिम दशों में इन्हे वैराग्य हो गया था जो इनकी कविता में दिखता है। सुजान के न मिलने की तड़प भी दीखती है

"दीनदयाल अगाधे, राधे, राधे राधे राधे
तेरी मिलिबे को ब्रजमोहन बहुत जतन है साधे"

विद्यापति अपने समय के महान रचनाकार है रीतिकाल के प्रसिद्ध कवि है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) हिंदी रंगमंच की विकास-यात्रा में राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय का योगदान।

हिन्दी रंगमंच की विकास यात्रा लम्बी विकास यात्रा रही है प्राचीन काल में भरतमुनि के "नाट्यशास्त्र" से प्राय इसकी शुरुआत मानी जाती है किन्तु हिन्दी के रंगमंच की शुरुआत 1871 में नेपाल के भतगाँव से मानी जाती है।

रंगमंच के विकास में राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय की स्थापना महत्वपूर्ण घटना है।

* राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय ने हिन्दी नाटकों को रंगमंचित करने में प्रगतिशील रूख अपनाया है।

* कौशलपूर्ण अभिनय सिखाया जाता है तथा पहली बार महिला पात्रों के लिए महिलाओं द्वारा मंचन किया गया था

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

* रंगमंच का देश व्यापी प्रसार कर
उसका दायरा व्यापक किया था

* वर्तमान सिनेमा के लिए पृष्ठभूमि तैयार
की थी।

* जनता एवं रंगमंच के बीच की दूरी
कम की।

राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय का
हिंदी के रंगमंच के विकास में सराहनीय
योगदान रहा है तथा देश के सर्वव्यापी
प्रसार के लिए इसकी सराहना की जानी
चाहिए

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

6. (क) 'समानान्तर' कहानी-आन्दोलन का परिचय देते हुए हिन्दी कहानी को उसका अवदान बताइए। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

7. (क) हिंदी साहित्येतिहास-लेखन में आचार्य रामचंद्र शुक्ल की सीमाओं का विवेचन कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हिंदी के साहित्येतिहास लेखन में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल जी ने पारंपरिक दृष्टिकोण का परिचय दिया है। तथा साहित्येतिहास को ठोस आधार प्रदान किया है। हालांकि उनके साहित्येतिहास लेखन की कुछ सीमाएं है।

निम्न सीमाएं है

परम्परागत मूल्य - शुक्ल जी अपने परम्परागत मूल्यों से बाहर नहीं आ पाये तथा उन्होंने प्रायः इसी दृष्टि को अपनाते हुए धर्मनिरपेक्ष काव्य एवं कबीर के महत्व को कम किया है।

आग्रहपूर्ण नजरिया - शुक्ल जी कुछ काव्य के प्रति आग्रह पूर्ण नजरिया रखते/तैयार करते है जैसे उन्हे तुलसीदास एवं सूर को अधिक महत्व दिया है वहीं तुलसी कबीरदास जी को

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कम महत्व दिया है।

भक्तिकाल को बाँटना - शुक्ल जी ने भक्ति० को दो भागों निर्गुण काव्य० एवं सगुण काव्य में बांटा है एवं सगुण काव्य को अधिक महत्व दीया है।

सिद्ध नाथ साहित्य : सिद्ध नाथ साहित्य को धार्मिक साहित्य बताते हुए खारिज कर दिया है जबकि द्विवेदी जी ने इसे भी साहित्य माना है तथा कहा है भी धार्मिक आधार पर इसे खारिज करेंगे तो फिर तो भक्तिकाल का सारा साहित्य खारिज करना होगा।

धर्मनिरपेक्ष काव्य कम महत्व - इन्होंने धर्म० काव्य को पर्याप्त महत्व नहीं दिया तथा इसको निम्न या अभारतीय माना है। जैसे कबीर एवं जायसी के भक्ति को अभारतीय बताया है जबकि कबीर को भक्ति नाथ से प्रभावित साधना पद्धति थी।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

केशवदास के प्रति - शुक्ल जी ने केशवदास को अलंकारिक कवि माना है जबकि उनकी रचना "रसिकप्रिया" पूर्णतः रसवादी रचना है।

युगीन आलोक में लेखन - शुक्ल ने प्राचीन के हुई सभी घटनाओं की युगीन परिस्थिति के आलोक में देखा है जैसा भक्तिकाल को इस्लामी प्रतिक्रिया में शुरू हुआ आंदोलन बताया है।

कबीर - कबीर की भक्ति को अभारतीय तथा भाषा को अशुद्ध बताया है जबकि द्विवेदी जी ने कबीर को भाषा का डिक्टेटर कहा है।

आदिकाल नामकरण - आदिकाल को उन्होंने वीरगाथा काल कहा है। जो मान्य नहीं है ~~द्विवेदी जी~~ बल्कि आदिकाल को मान्य माना जाता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

हालांकि शुक्ल जी साहित्येतिहास की कुछ विशेषताएं भी है।

* साहित्येतिहास लेखन आधार प्रदान किया,
* वैज्ञानिक एवं तत्पक्षवादी दृष्टिकोण से लेखन किया।
* नामकरण एवं कालविभाजन लगभग सही किया है।

शुक्ल जी के के लेखन की कुछ सीमाएं है किंतु फिर भी उनका साहित्येतिहास आज भी मान्य होता है तथा साहित्य को समझने में आज भी प्रयोग किया जाता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'आधे-अधूरे' नाटक की संवेदना पर प्रकाश डालिये। 15

मोहन राकेश विशेष्ट रचनाकार है जो नयी कहानी दौर के रचनाकार है जिनमें उनकी कहानी "एक और जिंदगी" महत्वपूर्ण है तथा "आधे-अधूरे" उपन्यास भी उनकी नयी कहानी की विशेषताओं को धारण करता है।

आधे-अधूरे में मोहन राकेश ने महेन्द्रनाथ एवं सावित्री चरित्रों के माध्यम से आधुनिक समस्याओं विसंगतिबोध लघुमानव, आदि को उठाया है महेन्द्रनाथ एवं उनकी पत्नि सावित्री शुरुआती दौर में एकान्तिक प्रेम से भरे युग्म की तरह होते है धीरे-2 संबंधों में कटुता आती है

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न सख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

मोहन राकेश दिखाते है जिससे हम प्यार करते रहे है एक समय पर उससे भी कैसे नफरत करने लगते है।

पारिवारिक विघटन

एवं कटुता, वैचारिक मतभेद के कारण दोनों अलग हो जाते है तथा दोनों नये व्यक्ति से टकराते और अन्तत: उसे भी अधूरा पाते है। इसमें माध्यम से मोहन राकेश दिखाते है की सभी चरित्र आधे-अधूरे का शिकार है कोई भी पूर्ण रूप से सुखी नहीं है सभी में कोई न कोई समस्या है

अन्तत: दोनों उसी आधे-अधूरे के साथ रहने को विवश हो जाते है जीवन में यही रहता है हमें किसी न किसी के साथ रहना ही है। जिस कारण सभी मनुष्य आधे अधूरे बन गये है

आधे अधूरे में

मोहन राकेश ने पति-पत्नि के संबंधों को इसके का आधार बनाया है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न सख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

तथा इसे मार्मिकता के साथ प्रस्तुत किया है।

आधे अधूरे

~~आत्क~~ उपन्यास अपनी मूल संवेदना में नयी कहानी की विशेषताओं को धारण करता है जिसमें अलगाववाद, अकेलापन, लघुमानव दिखाया है तथा सार्त्र, एवं कामू के अस्तित्ववाद का भी प्रभाव दिखता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

(कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space))

(ग) हिंदी की आंचलिक उपन्यासधारा पर प्रकाश डालिये। 15

(कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space))

हिन्दी की आंचलिक उपन्यास धारा का प्रस्थान बिन्दु "मैला आंचल" को माना जाता है जिसकी रचना 1954 में हुई थी इसी ने आंचलिक उपन्यास के मापदण्ड रचे है आगे कोई इसकी टक्कर का उपन्यास नहीं बन सकता है।

फणीश्वरनाथ रेणु के अन्य आंचलिक उपन्यास परती परीकथा तथा नागार्जुन का बलचनामा भी इसके साथ प्रतिस्पर्धा नहीं कर पाते है

आंचलिक उपन्यास धारा की विशेषताएं

(*) आंचलिक उपन्यासों में आंचल ही नायक होता है तथा आंचल ही समग्र चित्रण किया जाता है। आंचल के हर पक्ष को उभारने की कोशिश की

Copyright – Drishti The Vision Foundation

जाती है जैसे मैला आंचल में रेणु जी ने भी लिखा है

"इसमें फूल भी है, शूल भी है, धूल भी है, गुलाब भी है, कीचड़ भी है, सुन्दरता भी है, कुरूपता भी है मैं किसी से भी [illegible] नहीं बचा पाया है"

(*) समग्र चित्रण करने हेतु ~~किसी की~~ चरित्रों एवं घटनाओं की संख्या अधिक होती है।

(*) स्थानीय भाषा का प्रयोग किया जाता है जिससे स्थानीयता पूर्ण रूप से जाहिर हो, हालांकि इसके कारण यह अन्य क्षेत्र के पाठक के लिए बोधगम्य नहीं रह जाता है।

(*) इसमें नायक, नायिका, खलनायक जैसे त्रिकोण नहीं बन पाता है बल्कि प्रकृति को अधिक महत्व दिया जाता है क्योंकि प्रकृति ग्रामीण समाज का [illegible]

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

हिंसा होती है।

(*) स्थानीयता को अधिक उभारने के लिए जाति, धर्म आदि का भी चित्रण किया जाता है

आंचलिक उपन्यास स्वतंत्रोत्तर युग में विकसित हुई धारा है जिसके शीर्ष रचनाकार फणीश्वरनाथ रेणु हालांकि अन्य रचनाकारों, नागार्जुन, उपेन्द्रनाथ ने भी इस विषय पर लेखनी चलाई है

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

8. (क) 'अंधेर नगरी' नाटक की प्रासंगिकता पर प्रकाश डालिये।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation